

Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- dhabeerparasad@gmail.com

WHAT IS THINKING?

भिन्न-भिन्न मनोविज्ञानिकों ने चिंतन को अपने ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है।

वारेन के अनुसार-“ चिंतन एक विचारात्मक क्रिया है, जिसका स्वरूप प्रतीकात्मक होती है, जिसकी उत्पत्ति व्यक्ति के सामने उपस्थित समस्या से होती है, जिससे समस्या-वृत्ति की दिशा में कुछ प्रयत्न एवं भूल होते हैं, तथा अंत में समस्या का समाधान मिल जाता है”।

“Thinking is an ideational activity, symbolic in character, initiated by a problem the individual is facing, involving some trial and error but under the direction influence of

the problem, ultimately leading to the solution of the problem.”

इसी प्रकार सिलवरमैन के अनुसार-“ चिंतन एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है, जो हमें उद्दीपनों एवं घटनाओं के प्रतीकात्मक कल्पना के उपयोग द्वारा समस्याओं के समाधानों को प्राप्त करने के योग बना देते है”।

“Thinking is an process that enables us to find solutions to problems by using symbols representation of stimuli and events.”

इन परिभाषाओं के आधार पर चिंतन के स्वरूप के संबंध में निम्नलिखित विशेषताएँ दृष्टिगोचर होता है-

1. चिंतन एक विचारात्मक प्रक्रिया है। इसका संबंध विचारों से होता है। इसमें प्रतीकों की प्रधानता होती है। ये प्रतीक पूर्व की घटनाओं एवं वस्तुओं के प्रतिनिधि के रूप में काम करते हैं। यहा यह स्मरण रहना चाहिए कि चिंतन का संबंध उपस्थित वस्तुओं या घटनाओं से हो भी सकता है और नही भी।

2. चिंतन के लिए समस्या का होना आवश्यक है।

व्यक्ति के सामने जब कोई ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिसका कोई तात्कालिक समाधान नजर नहीं आता है तो उसके सामने एक समस्या आ खरी हो जाती है और इसी समस्या के साथ चिंतन क्रिया शुरू हो जाती है। यदि कोई व्यक्ति सोना का पहाड़ के संबंध में सोच विचार कर रहा होता हो तो वह कल्पना है, चिंतन नहीं।

3. चिंतन में प्रयत्न तथा भूल होते हैं। जब व्यक्ति अपने समस्या के समाधान के लिए प्रयास करता है तो कभी उसे सफलता मिलती है और कभी असफलता। ये प्रयत्न तथा भूल मानसिक स्तर पर समस्या के समाधान तक जारी रहते हैं।

4. चिंतन में मानसिक तत्परता का भी हाथ होता है। व्यक्ति समस्या के समाधान के समय एक विशेष दिशा में मानसिक रूप से तत्पर हो उठता है और उसी दिशा में प्रयत्न एवं भूल करके समस्या का

समाधान खोजने लगता है। यदि वह सही दिशा में तत्पर होता है तो समस्या जल्दी हल हो जाती है और यदि गलत दिशा में तत्पर होता है तो समस्या समाधान कठिन हो जाता है।

5. चिंतन की क्रिया समस्या के समाधान तक जारी रहती है। लक्ष्य की प्राप्ति होते ही समस्या हल हो जाती है और इसी के साथ चिंतन क्रिया का अन्त हो जाता है।